vke|[k

बच्चे हमारी परंपरा के वाहक हैं और भविष्य की आशा भी। उत्सुकता से चमकती आँखों और अपरिमित ऊर्जा वाले बच्चे सीखने की ललक लेकर विद्यालय आते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक, अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था– मुझमें कोई विशेष प्रतिभा नहीं है, लेकिन मुझमें सिर्फ़ जानने की प्रबल उत्सुकता है।

ये पंक्ति पठन–पाठन पद्धति के इस महत्त्वपूर्ण पक्ष को दर्शाती है कि बच्चों को सीखने के पूरे अवसर मिलें ताकि उनमें उत्सुकता बनी रहे। इसलिए हमें स्कूल और कक्षा का वातावरण, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें, शिक्षण सामग्री, गुणवत्तापूर्ण सिखाने और सीखने के लिए समय, शिक्षक की भूमिका आदि पर और अधिक ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है।

गुणवत्तापरक परिवर्तन को लक्ष्य बनाकर बच्चों को गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा प्राप्त हो, इसके लिए विभाग द्वारा विभिन्न उपाय किए जा रहे हैं। इनके अंतर्गत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व शिक्षा का अधिकार 2009 तथा अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2009 के मद्देनजर कक्षा 1 से 5 की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है।

इन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी हो। बच्चों के स्कूली जीवन को उनके परिवेश से जोड़ा जाए, जिससे स्कूल और घर के बीच की दूरी कम हो सके। इन पाठ्यपुस्तकों से बच्चों को छान–बीन करने, स्वयं करके देखने–समझने, समस्या का स्वयं समाधान ढूँढ़ने जैसे कौशलों के विकास के अनेक अवसर मिल सकें, जिससे बच्चे केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित न रहें अपितु परिवेश में उपलब्ध साधनों की ओर भी उन्मुख हों।

सीखने की प्रक्रिया में बच्चों का अपना सामाजिक संदर्भ महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्हें सामाजिक विविधता के साथ–साथ धर्म, जाति, लिंग के प्रति समानता, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों एवं बड़े बुज़ुर्गों के प्रति संवेदनशीलता, आदर–भाव तथा हरियाणा की संस्कृति की छटा को समझने के समुचित अवसर मिल सके, नवनिर्मित पाठ्यपुस्तकों में इनका गंभीरता से प्रयास किया गया है।

इन पुस्तकों में बच्चों के आस–पास की सामाजिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों को आधार बनाकर प्रत्येक स्तरानुसार विषय–सामग्री और गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है। इससे सभी बच्चे रोचक ढंग से स्तरानुसार व अपनी गति के अनुसार दक्षताओं और कौशलों का विकास कर पाएँगे। शिक्षक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा बच्चों का आकलन कर उनके स्तरानुसार दक्षताओं और कौशलों को विकसित करने में सहायक होंगे।

यह उल्लेख भी प्रासंगिक होगा कि इन पुस्तकों को आप के बीच से आए विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के सहयोग से राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव द्वारा तैयार किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अध्यापकगण इनके अंतर्निहित भावों को जानकर शिक्षण को रुचिकर बनाते हुए व विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को अपने कौशल से, सीखने के भरपूर अवसर प्रदान करेंगे।

vfrfjDr e|[; lfpo]

fo|ky; f'k{kk] gfj;k.kk] p.Mhx<

ikB;iLrd fuek.k lfefr

lj{kd eMy	–	केशनी आनन्द अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा। रोहतास सिंह खरब, निदेशक, मौलिक शिक्षा विभाग, हरियाणा। आलोक वर्मा, राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्
ekxn'ku	–	स्नेहलता, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव।
leUo; lfefr	–	सुशील बत्रा, संयुक्त निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव। रवींद्र सिंह फौगाट, अध्यक्ष, पाठ्यपुस्तक विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा, गुड़गाँव।
iujoykdu lfefr	–	डी.सी. ग्रोवर, सेवानिवृत्त वरिष्ठ विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव। डॉ. योगेश वासिष्ठ, विषय विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव।
leh{kk lfefr	–	डॉ. संध्या सिंह, प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली। डॉ. रामकरण डबास, सेवानिवृत्त भाषा विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली। कान्ता कश्यप, सेवानिवृत्त भाषा विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव। अक्षय दीक्षित, शिक्षक, नगर निगम दिल्ली
lnL;	–	तनु भारद्वाज, विषय विशेषज्ञ,एस.सी.ई.आर.टी.हरियाणा, गुड़गाँव अलका रानी संस्कृत, प्राध्यापिका, डाइट गुड़गाँव, गुड़गाँव ब्रजेश शर्मा, हिंदी प्राध्यापक, डाइट जनौली, पलवल महेन्द्र सिंह, खंड संसाधन व्यक्ति, बौंद कलाँ, भिवानी राजेश कुमार, खंड संसाधन व्यक्ति, अग्रोहा, हिसार सोमप्रकाश, खंड संसाधन व्यक्ति, कैथल, कैथल वेदप्रकाश, खंड संसाधन व्यक्ति, बवानी खेड़ा, भिवानी कुलदीप सिंह, खंड संसाधन व्यक्ति, हाँसी–2, हिसार पूर्वा सिंह, खंड संसाधन व्यक्ति, फरीदाबाद, फरीदाबाद राजकुमार, खंड संसाधन व्यक्ति, रानियाँ, सिरसा बलविन्द्र सिन्हा, खंड संसाधन व्यक्ति, शहजादपुर, अंबाला
lnL; ,o leUo;d	–	राजेश यादव, विषय विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव।

vkHkkj

मौलिक शिक्षा विभाग, हरियाणा अपने प्रांत की राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की संपूर्ण पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के प्रति आभार व्यक्त करता है। इन पुस्तकों के लेखन में एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली ने जिन विशेषज्ञों को इस कार्य हेतु नियुक्त किया, उसके प्रति हम उनके आभारी हैं। यह विभाग इस पुस्तक के पुनरवलोकन, समीक्षा व महत्त्वपूर्ण सुझावों के लिए प्रो. के.के. वशिष्ठ पूर्व अध्यक्ष, प्रा.शि.वि., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, प्रो. रामसजन पांडे, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक व डॉ. शारदा कुमारी, भाषा विशेषज्ञ, डाइट, दिल्ली के प्रति विशेष आभार व्यक्त करता है। जिन रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने की स्वीकृति प्रदान की व साथ ही एकलव्य भोपाल के भी हम प्रकाशन स्वीकृति प्रदान करने के लिए आभारी हैं।

हमारे प्रयासों के बावजूद यदि किसी रचनाकार अथवा संस्था का नाम छूट गया हो तो विभाग उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता है। भविष्य में नाम की जानकारी होने पर आगामी संस्करणों में संशोधन कर लिया जाएगा। अज्ञात एवं अनजान कवियों व लेखकों की रचनाएँ सुविधावंचित बच्चों के लिए हैं। इनका निशुल्क वितरण किया जाना है। ये पुस्तकें किसी व्यक्तिगत लाभ को मद्देनजर रखकर नहीं बनाई गई।

पुस्तकों के टंकण कार्य हेतु बबली एवं देवानंद तथा चित्रांकन व साज–सज्जा के लिए फजरूद्दीन एवं कमल किशोर का भी यह विभाग आभार व्यक्त करता है।

पाठ्यपुस्तक के विकास में जिन विद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थी बातचीत हेतु सहयोगी रहे तथा जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस पाठ्य पुस्तक को मूर्त रूप देने में सहयोग दिया, विभाग उन सभी सर्जकों के प्रति आभार व्यक्त करता है।

jkgrk l flg [kjc
fun’kd] ekfyd f’k{kk]
gfj;k.kk] iapdyk

f'k{kdk ,o vfHkHkkodk d fy,

मानव हृदय की मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा ही है। हृदय के उद्गारों को भाषा के माध्यम से ही सहजता और सरलता से प्रकट किया जा सकता है। बच्चे पढ़ने के क्रम में अपने स्तर के अनुसार सभी भाषायी कौशलों का प्रयोग करना सीख जाते हैं। प्रारंभिक सोपान में बच्चे चित्रकथाओं, बालगीतों, कहानियों व कविताओं का रसास्वादन लेने से परिचित हो चुके हैं पर कई स्तरों पर भाषा का विकास अभी भी हो रहा है। पढ़ते व लिखते समय वे इस ज्ञान की तुलना बार–बार उन बातों से करते हैं, जो वे पहले से जानते हैं। पठन सामग्री बच्चों को रुचिकर तभी लगती है, जब पूर्व ज्ञान से उस सामग्री का संबंध जुड़ता है।

यहाँ बच्चों की स्वाभाविक रुचियों और जिज्ञासाओं का ध्यान रखते हुए उनमें बात कहने, सुनने, पढ़ने व लिखने के कौशल तथा तर्क देने जैसी क्षमताओं को विकसित करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में शिक्षण के मूलभूत उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बच्चों को मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए हैं।

पुस्तक में बाल साहित्य भरपूर मात्रा में दिया गया है ताकि बच्चों का पढ़ने–लिखने के प्रति रुझान बढ़ सके। श्रवण और पठन कौशल के विकास में कविता का बहुत योगदान रहता है। इस दृष्टि से परिवेश से जुड़े बालगीत एवं कविताएँ पाठ्यपुस्तक में डाली गई हैं। शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे बालगीत एवं कविताओं का कक्षा में हाव–भाव सहित वाचन करें तथा बच्चों को साथ मिलकर कविता प्रस्तुत करने के लिए कहें। बच्चों की रुचि एवं परिवेश के अनुसार पुस्तक में बहुरंगी चित्रों का समावेश किया गया है। ये चित्र बच्चों को न केवल विषयवस्तु समझने में मदद करते हैं वरन् उनको अपने परिवेश से भी जोड़ते हैं। कहानियाँ बच्चों की कल्पना को नई उड़ान देती हैं व उनकी जिज्ञासा तथा कल्पना को बढ़ाती हैं। इसीलिए पाठ्यपुस्तक में रोचक व शिक्षाप्रद बाल कहानियों का समावेश किया गया है। कहानियों के पात्र अलग–अलग शैली में बच्चों पर स्नेहिल प्रभाव छोड़ते नजर आते हैं।

बहुभाषिकता का भाषा विकास के एक संसाधन के रूप में प्रयोग किया गया है। पुस्तक में ऐसे अनेक अवसर उपलब्ध कराए गए हैं, जहाँ स्थानीय भाषा को हिंदी में तथा हिंदी के शब्दों को स्थानीय भाषा में समझाने का प्रयास किया गया है। इससे विषय की बालकों से निकटता बनी रहती है।

भाषायी विविधता भाषा विकास की कड़ी है और सभी भाषाएँ एक दूसरे के सान्निध्य में ही फलती–फूलती हैं। इसलिए कक्षा में प्रवेश करने पर बच्चे को आंचलिक शब्दों का प्रयोग करते हुए स्थानीय भाषा में अपनी बात कहने का अवसर प्रदान करें और आप प्रत्येक बच्चे की बात का सम्मान करते हुए उसे प्राथमिकता दें। इस पुस्तक में अभ्यास के अंतर्गत 'पाठ से/कविता से' पाठ आधारित प्रश्न हैं, जो बच्चों में विषय का बोध एवं लिखित अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए दिए गए हैं। 'आपकी बात' शीर्षक में दिए गए प्रश्न बच्चों को अपने परिवेश से जुड़ने एवं अपने अनुभवों को अपनी भाषा में कहने के लिए प्रेरित करते हैं। 'भाषा की बात' शीर्षक के अंतर्गत बच्चों को सहज एवं क्रियात्मक रूप से व्याकरण का बोध कराने का प्रयास है। वर्ग पहेली, साँप–सीढ़ी, मिलान करो एवं अन्य

खेल गतिविधियों के द्वारा इस विषय को रुचिकर बनाने का प्रयास किया गया है। जिसमें उन्हें स्वयं करके सीखने का अवसर प्रदान किया गया है। 'यह भी करें' शीर्षक के अंतर्गत विषय के प्रति रुचि जाग्रत करने के साथ–साथ उन्हें अपने परिवेश से जोड़ने का उपक्रम है, यह उनके सर्जनात्मक कौशल को भी विकसित करने का प्रयास है।

पुस्तक में 'कुछ और पढ़ें' शीर्षक के अंतर्गत, पहेलियाँ, कविताएँ व कहानियाँ दी गई हैं, जो केवल पठन कौशल का विकास करने के उद्देश्य से दिए गए हैं, परीक्षा की दृष्टि से उन पाठों के आधार पर बच्चों का आकलन नहीं किया जाना। यह स्वाध्याय की आदत का विकास करने का प्रयास है। यद्यपि पुस्तक में लिखने के अभ्यास हेतु पर्याप्त स्थान उपलब्ध कराया गया है किंतु अतिरिक्त लेखन अभ्यास के लिए अलग से अभ्यासपुस्तिका का प्रयोग किया जा सकता है। अभिभावकों से भी अपेक्षा है कि वे घर पर भी उन्हें ऐसे अवसर उपलब्ध कराएँ। यह जानने के लिए कि बच्चों ने शिक्षण उपरांत कितना सीखा, पुस्तक में कुछ पाठों के बाद पठित पाठों के आधार पर आकलन हेतु सामग्री दी गई है।

पुस्तक में बच्चों को अपने अनुभवों और कल्पनाओं को विस्तार देने के भी अनेक अवसर प्रदान किए गए हैं। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे आई.सी.टी. का प्रयोग करते हुए बच्चों का ज्ञानवर्धन करें व बाल मनोविज्ञान को समझते हुए बच्चों के चारों ओर ऐसा वातावरण निर्मित करें, जिसमें प्रकाश ही प्रकाश हो और नन्हे बालक कल्पना के हिंडोले में बैठकर अपनी जिज्ञासा को शांत करते हुए ज्ञान प्राप्त करें। मैं आशा करती हूँ कि प्रस्तुत पुस्तक f>yfey से आलोकित होकर बच्चे अपनी प्रतिभा से सारी दुनिया को प्रकाशित करेंगे।

funs'kd
, l-lh-b-vkj-Vh- gfj;k.kk]
xqMxkao

fo”k;&l ph

Øekd	ikB dk uke	foèkk	i”B l0
1.	जय जवान, जय किसान	(कविता)	1
2.	बड़ा	(लेख)	5
3.	शेर और चित्रकार	(कविता)	10
	• कोई लाके मुझे दे	(कुछ और पढ़ें)	15
4.	हॉकी का जादूगर	(निबंध)	18
5.	नदी यहाँ पर	(कविता)	24
6.	जासूस जमील	(कहानी)	29
	• बहन–भाई का प्यार	(कुछ और पढ़ें)	36
7.	गाँधी जी महान कैसे बने	(लेख)	38
8.	सूरदास के पद	(कविता)	47
9.	आसमान से परे	(जीवनी)	51
10.	रानी लक्ष्मीबाई	(नाटक)	57
11.	ईदगाह	(कहानी)	66
12.	हार नहीं होती	(कविता)	76
	• कुछ काम करो	(कुछ और पढ़ें)	80
13.	धरोहर	(लेख)	82
14.	पुष्प की अभिलाषा	(कविता)	90
15.	बूढ़ी गेंद	(कहानी)	95
	• दोहा दशक (गीता)	(कुछ और पढ़ें)	104